नव भारत
| संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्त्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी |

इबोला का नया खतरा और दुनिया की पुरानी भूलें

इबोला वायरस के खतरे को देखते हुए देश के सभी हवाई अड्डों पर अलर्ट और अफ्रीकी देशों की यात्रा करने वाले भारतीयों के लिए एडवाइजरी जारी की गई है. दरअसल, कोविड-19 महामारी के बाद दुनिया ने यह मान लिया था कि अब वैश्विक स्वास्थ्य व्यवस्था पहले से अधिक सतर्क और सक्षम हो चुकी है. लेकिन अफ्रीकी देशों में इबोला वायरस के नए प्रकोप ने एक बार फिर यह साबित कर दिया है कि संक्रामक बीमारियों के सामने मानवता की तैयारी अब भी अधूरी है. डेमोक्रेटिक रिपब्लिक ऑफ कांगो और उसके आसपास के क्षेत्रों में तेजी से फैल रहे इबोला संक्रमण ने अंतरराष्ट्रीय स्वास्थ्य एजेंसियों की चिंता बढ़ा दी है. अब तक 670 संदिग्ध मामले और 160 संदिग्ध मौतें सामने आना इस बात का संकेत है कि स्थिति साधारण नहीं है.

विश्व स्वास्थ्य संगठन ने जिस गंभीरता से चेतावनी जारी की है, वह पूरी दुनिया के लिए एक संदेश है. सबसे अधिक चिंता की बात यह है कि इस बार फैल रहा 'बुडिबुग्यों' स्ट्रेन ऐसा वायरस है, जिसके खिलाफ अभी तक कोई प्रभावी वैक्सीन उपलब्ध नहीं है. यानी दुनिया एक ऐसे संक्रमण से जूझ रही है, जिसका न तो तय इलाज है और न ही रोकथाम का कोई पुख्ता टीका. यही कारण है कि अफ्रीकी देशों में भय और असुरक्षा का माहौल तेजी से गहराता जा रहा है. इबोला कोई सामान्य बीमारी नहीं है. यह अत्यंत घातक संक्रमण है, जो संक्रमित व्यक्ति के खून, पसीने और अन्य शारीरिक तरल पदार्थों के संपर्क से फैलता है. संक्रमित वस्तुएं, शवों के संपर्क और असुरक्षित स्वास्थ्य व्यवस्थाएं इसके प्रसार को और तेज कर देती हैं. तेज बुखार, उल्टी, दस्त और आंतरिक रक्तस्राव जैसे लक्षण इसे और भयावह बनाते हैं. ऐसे में यदि समय रहते नियंत्रण नहीं किया गया तो यह केवल अफ्रीका तक सीमित रहने वाला संकट नहीं होगा.

दुखद पहलू यह भी है कि महामारी केवल वायरस से नहीं फैलती, बल्कि लापरवाही, अंधविश्वास और अव्यवस्था भी उसे खतरनाक बना देते हैं. कई क्षेत्रों में लोगों द्वारा इलाज केंद्रों पर हमले और चिकित्सा शिविरों को जलाने जैसी घटनाएं सामने आई हैं. यह स्थिति बताती है कि स्वास्थ्य संकट केवल वैज्ञानिक चुनौती नहीं, बल्कि सामाजिक और मनोवैज्ञानिक चुनौती भी है. जब जनता का भरोसा टूटता है, तब बीमारी और तेजी से फैलती है.

विश्व स्वास्थ्य संगठन की यह शिकायत भी उचित है कि दुनिया की प्राथमिकताएं अक्सर राजनीतिक और आर्थिक हितों के अनुसार तय होती हैं. विकसित देशों में फैलने वाले वायरस वैश्विक सुर्खियां बन जाते हैं, जबकि अफ्रीका जैसे क्षेत्रों के संकट को अपेक्षित गंभीरता नहीं मिलती. कोविड ने यह सिखाया था कि किसी भी देश की बीमारी सीमाओं में कैद नहीं रहती. आज यदि अफ्रीका में संक्रमण फैल रहा है, तो कल उसका असर एशिया और यूरोप तक पहुंच सकता है.

भारत जैसे विशाल और घनी आबादी वाले देश के लिए भी यह चेतावनी महत्वपूर्ण है. अंतरराष्ट्रीय यात्राओं और वैश्विक संपर्क के इस दौर में स्वास्थ्य निगरानी तंत्र को और मजबूत करना होगा. एयरपोर्ट स्क्रीनिंग, संक्रमण जांच, चिकित्सा संसाधनों की तैयारी और जनजागरूकता जैसे कदम समय रहते उठाने होंगे. साथ ही, भारत को वैश्विक स्वास्थ्य सहयोग में भी सक्रिय भूमिका निभानी चाहिए.

इबोला का यह नया प्रकोप केवल अफ्रीका का संकट नहीं, बल्कि पूरी मानवता की परीक्षा है. यदि दुनिया ने फिर देर की, तो इतिहास एक बार फिर वही सवाल पूछेगा कि क्या हमने महामारी से कोई सबक सीखा भी था?

हिंदी पत्रकारिता के दो साल

तीन सदी की जनसंचारीय यात्रा !

हरेंद्र प्रताप सिंह

हिन्दी पत्रकारिता में 1948 से 1975 का युग देश के विकास और भारतीय लोकतंत्र के सुदृढ़ीकरण को समर्पित था जिसमें हिन्दी पत्रकारिता का प्रोफेशनल विकास सर्वाधिक हुआ. खोजी पत्रकारिता, विकास पत्रकारिता और वैचारिक पत्रकारिता ने उस छोटी सी अवधि में बड़ी छलांग लगाई तथा हिन्दी पत्रकारिता की गूंज सर्वत्र सुनाई पड़ी. आपातकाल और जेपी आंदोलन ने हिन्दी पत्रकारिता की नैतिकता और गुणवत्ता का कड़ा इम्तिहान लिया जिसमें हिन्दी पत्रकारिता ने बेहतरीन प्रदर्शन किया. हिन्दी के अनेक पत्रकारों ने जहां लोकतंत्र की रक्षा में जेल की यात्राएं कीं, वहीं इस आंदोलन से निकल कर अनेक छात्र आगे चलकर सफल युवा पत्रकार बनने में सफल रहे.

वर्ष 2026 की इस मई में हिन्दी पत्रकारिता ने दो सौ साल पूरे कर लियेइस अवधि में हिन्दी पत्रकारिता ने तीन सदी की अपनी यात्रा पूरी की.पत्रकारिता से वह मीडिया बन गई.इस दौरान पूरी दुनिया बदल गई.पत्रकारिता का बदलना भी स्वाभाविक है.साप्ताहिक हिन्दी समाचार पत्र उदन्त मार्तण्ड (1826) से लेकर दैनिक द्विभाषी हिन्दी अखबार समाचार सुधावर्षण (1854) तक के युग ने प्रथम स्वतंत्रता आंदोलन (1857) की राष्ट्रीय नींव तैयार की और बहादुर शाह जफर को फिर से हिन्दुस्तान का बादशाह बनाने में प्रमुख भूमिका निभाई. भाषाई समाचार पत्र पयाम-ए-आजादी ने न सिर्फ अपनी पत्रकारिता से आजादी की चिंगारी को भड़काया बल्कि अपने नाम के अनुरूप ब्रिटिश हुकूमत को भारत की आजादी को स्वीकार करने का स्पष्ट संदेश भी दिया. अंग्रेजों ने इस सांकेतिक भाषा को समझ लिया और अगले नब्बे साल भारत से शांति से निकलने के लिए मार्ग तलाशने में लगाये. इस दौरान अंग्रेजों ने अनेक भारतीय मार्गदर्शक भी ढूंढने शुरू किये जो उन्हें सुरक्षित निकालने में सहयोग कर सकें. हिन्दी पत्रकारिता में 1857 के बाद भारतेन्दु हरिश्चन्द्र तक का समय हिन्दी भाषा के विकास तथा वैचारिक पत्रकारिता का युग है.स्वतंत्रता आंदोलन के अंतिम चरण यानि 1947 तक पहुंचते - पहुंचते हिन्दी पत्रकारिता ने राष्ट्रीय आकार धारण कर लिया और इसमें बाल गंगाधर तिलक, महात्मा गांधी, लाला लाजपत राय, डॉ. राजेन्द्र प्रसाद, मौलाना आजाद, गणेश शंकर विद्यार्थी, भगत सिंह, श्रीप्रकाश, माखनलाल चतुर्वेदी, बालमुकुंद गुप्त, महावीर प्रसाद द्विवेदी, प्रेमचंद, रामवृक्ष बेनीपुरी, यशपाल, बाबू विष्णु राव पराड़कर जैसे विचारक पत्रकारों तथा क्रांतिकारी पत्रकारों ने अग्रणी भूमिका निभाई.भारत बीसवीं सदी में समय से कुछ पहले ही आजाद हो गया.लेकिन इसकी बड़ी कीमत भारत को विभाजित होकर चुकानी पड़ी.अंग्रेज भारत के अनेक टुकड़े करने में सफल रहे. पहले बर्मा (म्यांमार) और फिर पाकिस्तान बना.फिर तीसरे टुकड़े के रूप में भारत जब आजाद हुआ तो मानसिक रूप से वह अंदर ही अंदर अनेक टुकड़ों में बंटा हुआ था. उधर बड़ी संख्या में देश को भारतीय क्रांतिकारियों की शहादत देनी पड़ी.सबसे बड़ा झटका था भगत सिंह को फांसी और सुभाष चन्द्र बोस का अचानक वायुयान दुर्घटना में गायब हो जाना.उससे भी बड़ा झटका था देशी नेताओं में सत्ता को लेकर आंतरिक राजनीति और महात्मा गांधी को राजनीतिक रूप से महत्वहीन बना देना. इसलिए 1826 से लेकर 1947 तक की लगभग सवा सौ साल की हिन्दी पत्रकारिता सबसे चुनौतीपूर्ण रही और उसने पत्रकारिता को मिशन के रूप में व्यापक विस्तार दिया और उसी का परिणाम था कि स्वतंत्र संवैधानिक भारत में हिन्दी देश की आधिकारिक राजभाषा बनने में सफल रही.हिन्दी और देश को इस मुकाम तक लाने में हिन्दी के छोटे समाचार पत्र, पत्रिका, रेडियो, आकाशवाणी तथा फिल्म एवं साहित्य से जुड़ी हस्तियों का विशेष योगदान रहा.इस युग में पूर्णकालिक पत्रकार तथा अल्पकालिक पत्रकार दोनों ने मिलकर मिशन की भावना से काम किया. इसमें कोई शक नहीं कि युवा पत्रकारों ने आजादी की लड़ाई में प्रथम पंक्ति से योगदान दिया. भारत में हिन्दी पत्रकारिता के चतुर्दिक विकास का स्वर्णिम युग रहा 1976 से 2000 तक.इस युग में हिन्दी की प्रिंट मीडिया ने तकनीकी रूप से भी अपना विकास किया और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया का एक सशक्त ढांचा तैयार हो गया.कंप्यूटर के आगमन ने समाचार और विचार के प्रसार की गति बढ़ा दी तथा क्षेत्रीय संस्करणों का उदय तेजी से हुआ.पराड़कर की हिन्दी पत्रकारिता राजेन्द्र माथुर और एस. पी. सिंह से होती हुई टेलीविजन में नलिनी सिंह, रजत शर्मा और प्रभु चावला जैसे पत्रकारों के लिए आधार तैयार करने में सफल रही और उसका सर्वश्रेष्ठ रूप इक्कीसवीं सदी में 2001 से 2026 तक दिख रहा है.इसी बीच भारत में आकाशवाणी ने अपनी नब्बे साल की यात्रा सफलता से पूरी कर ली है जिसमें हरित क्रांति और श्वेत क्रांति में उसकी भूमिका तथा कृषि एवं युवा और सैनिक भाइयों के कार्यक्रमों में उसके योगदान तथा आंखों देखा हाल यानि विभिन्न प्रकार की कमेंट्री में उसके कद्रदानों की बड़ी संख्या की अनदेखी नहीं की जा सकती है. मूल प्रश्न है कि इतनी शानदार यात्रा के बाद आज हिन्दी पत्रकारिता अपनी तीसरी सदी में कहां है और किस हाल में है तथा उसे कहां होना चाहिए.सच यह है कि तकनीकी विकास तथा सोशल मीडिया की गलतफहमी वाले जनसंचार के बावजूद आज भी प्रिंट मीडिया सबसे विश्वसनीय है.इसमें फिर से एक बार लघु और मध्यम समाचार पत्रों की भूमिका बढ़ गई है.

(लेखक देश के वरिष्ठ पत्रकार हैं और लगभग आधी सदी से मीडिया में सक्रिय हैं)

मध्य क्षेत्र की डायरी

मध्यप्रदेश कांग्रेस में राज्यसभा की रेस

अकादमिक राजनीति' बनाम 'जमीनी सोशल इंजीनियरिंग'

दिलीप झा

मध्यप्रदेश की राजनीति इस समय एक दिलचस्प और चुनौतीपूर्ण मोड़ पर है.भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) की आक्रामक सोशल इंजीनियरिंग और मुख्यमंत्री के रूप में मोहन यादव को आगे लाकर खेले गए 'यादव कार्ड' ने राज्य के राजनैतिक समीकरणों को पूरी तरह बदल दिया है. ऐसे में विपक्ष की भूमिका निभा रही कांग्रेस के सामने सबसे बड़ी चुनौती यह है कि वह संसद के उच्च सदन यानी राज्यसभा में किसे भेजे? क्या कांग्रेस वैचारिक और 'ड्रॉइंग रूम' पृष्ठभूमि वाले नेताओं पर दांव लगाएगी, या फिर जमीनी जनाधार, सामाजिक विरासत और जातीय समीकरणों को प्राथमिकता देगी? हालांकि इस समय कांग्रेस के भीतर दो चेहरों को लेकर कयासों का बाजार गर्म है. पूर्व सांसद मीनाक्षी नटराजन और पूर्व प्रदेश अध्यक्ष अरुण यादव.लेकिन राज्य की मौजूदा जमीनी हकीकत को देखते हुए यह सवाल उठना लाजिमी है कि मध्यप्रदेश कांग्रेस के लिए इस वक्त कौन सा चेहरा अधिक उपयोगी साबित होगा?

मीनाक्षी नटराजन निस्संदेह कांग्रेस की एक बेहद प्रखर, अनुशासित और वैचारिक रूप से मजबूत नेता हैं लेकिन उनके पास जनाधार नहीं है.राहुल गांधी की कोर टीम का अहम हिस्सा रहीं नटराजन की निष्ठा पर कोई सवाल नहीं उठाया जा सकता. दिल्ली के राजनैतिक गलियारों में उनका अपना एक विशेष प्रभाव जरूर है लेकिन ज़मीन पर कार्यकर्ताओं में उनकी पकड़ नहीं बन पाई है परंतु, सिक्के का दूसरा पहलू यह है कि उनका चुनावी प्रभाव केवल केंद्र में यूपीए सरकार के समय तक सीमित था. पिछले लंबे समय में जमीन पर या अपने क्षेत्र में उनकी कोई ऐसी सक्रियता नहीं रही है, जिससे कि आम जनता उनके नाम पर कांग्रेस को वोट दे. राजनीति में वैचारिक शुद्धता का महत्व है, लेकिन जब मुकाबला भाजपा की आक्रामक मशीनरी से हो, तो केवल 'ड्रॉइंग रूम' बैठकों से सीटें नहीं जीती जा सकतीं. मीनाक्षी नटराजन किसी बड़े सामाजिक वर्ग या जाति का प्रतिनिधित्व नहीं करती हैं, जिसका राज्य में प्रभावशाली वोट बैंक हो. ऐसे दौर में केवल अकादमिक नेतृत्व पर दांव लगाना कांग्रेस के लिए आत्मघाती साबित हो सकता है. पूर्व मुख्यमंत्री कमलनाथ और उनके बेटे नकुलनाथ भी इस रेस में आगे हैं. गांधी परिवार से उनकी निकटता किसी से छिपी नहीं है. उन्होंने मध्यप्रदेश में 2018 में मध्यप्रदेश में कांग्रेस की सरकार बनवाई थी.

अरुण यादव का वो ऐतिहासिक निर्णय

दूसरी ओर, जब हम अरुण यादव की बात करते हैं, तो उनके पक्ष में सबसे बड़ा तर्क उनका वो अथक जमीनी संघर्ष है, जिसने मध्यप्रदेश में कांग्रेस को मृतप्राय: अवस्था से बाहर निकाला था. अक्सर लोग भूल जाते हैं कि 2018 में 15 साल बाद जो कांग्रेस की सरकार बनी थी, उसकी पटकथा किसने लिखी थी. अरुण यादव ने अपने प्रदेश अध्यक्ष के कार्यकाल के दौरान 4 साल में करीब 180 विधानसभाओं की सघन पदयात्रा की थी.उन्होंने गाँव-गाँव, बूथ-बूथ जाकर 'बूथ कमेटियों' का जमीनी ढांचा तैयार किया था.इसी अभूतपूर्व जमीनी मेहनत का परिणाम था कि 2018 में कांग्रेस सत्ता के शिखर तक पहुँची, जिसका सीधा लाभ तत्कालीन मुख्यमंत्री कमलनाथ को मिला। इसके साथ ही, अरुण यादव के पक्ष में कई अन्य अकाट्य तर्क हैं: स्वर्गीय सुभाष यादव की 'सहकारिता विरासत': उनके पूजनीय पिता (पूर्व उप-मुख्यमंत्री) को मध्यप्रदेश में 'सहकारिता आंदोलन' का जनक कहा जाता है.किसानों, दुग्ध उत्पादकों और ग्रामीण समाज का यह भावनात्मक जुड़ाव आज भी अरुण यादव के साथ मजबूती से खड़ा है। अरुण यादव केवल एक वर्ग तक सीमित नहीं हैं.हिंदू, मुस्लिम, सिख, ईसाई सहित एससी, एसटी, ओबीसी और प्रबुद्ध ब्राह्मण वर्ग में भी उनका जीवंत संपर्क और गहरा आदर है। मालवा-निमाड़ के अलावा बुंदेलखंड, विंध्य और नर्मदापुरम अंचल, मध्य क्षेत्र (ग्वालियर,भोपाल) महाकौशल (जबलपुर संभाग) में भी उनके वफादार कार्यकर्ताओं की एक बहुत बड़ी फौज है। वर्तमान राजनैतिक परिदृश्य में कांग्रेस के सामने सबसे बड़ी चुनौती अपने विधायकों को एकजुट रखने और 'क्रॉस-वोटिंग' को रोकने की है.यदि कांग्रेस अरुण यादव को राज्यसभा का प्रत्याशी बनाती है, तो यह खतरा नगण्य हो जाता है।

अब एसआईआर को सारे देश में हरी झंडी

चुनाव आयोग के कदमों को लेकर विपक्ष कितनी ही आलोचना करे, लेकिन देश की सबसे बड़ी अदालत ने मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) को पूरी तरह वैध व संवैधानिक करार दिया है. यह फैसला देश के 16 राज्यों व 3 केंद्र शासित प्रदेशों में होने वाली एसआईआर प्रक्रिया के लिए महत्वपूर्ण कानूनी समर्थन है. 14 मई की अधिसूचना के अनुसार अब महाराष्ट्र, हरियाणा, पंजाब, चंडीगढ़, दिल्ली में मतदाता सूची की विशेष रूप से गहरी छानबीन होगी, जिसमें दिवंगत, अन्यत्र जा बसे तथा डुप्लीकेट मतदाताओं के नाम हटाए जाएंगे. सुप्रीम कोर्ट ने बिहार में 22 वर्ष बाद मतदाता सूची की व्यापक जांच को उचित ठहराया व कहा कि चुनाव आयोग ने अपने अधिकारों से बाहर जाकर काम नहीं किया. इस फैसले में राहत की बात यह है कि किसी की नागरिकता पर संदेह है तो आयोग खुद अंतिम निर्णय नहीं लेगा, बल्कि मामला केंद्र की अथॉरिटी को भेजेगा. इसी तरह ड्राफ्ट रोल से बाहर होना अंतिम डिलीशन नहीं है. इसमें आपत्ति उठाते हुए अपील, सुनवाई व न्यायिक समीक्षा भी हो सकती है. नागरिकता के बारे में संदेह होने पर यदि नाम हटाया जाता है, तो यह मामला लटकाया नहीं जाएगा, बल्कि आयोग को ऐसा केस 4 सप्ताह में केंद्र सरकार की सक्षम अथॉरिटी को भेजना होगा. नोटिस और सुनवाई के बाद अथॉरिटी इस पर फैसला करेगी. सुप्रीम कोर्ट ने स्पष्ट किया कि ऐसे मामले का निपटारा अगले लोकसभा, विधानसभा या स्थानीय निकाय चुनाव के पहले कराने का प्रयास किया जाना चाहिए. यदि अथॉरिटी शिकायतकर्ता को नागरिक मानती है तो उसका नाम मतदाता सूची में जोड़ा जाएगा. एसआईआर में बिहार की मतदाता सूची से 68.66 लाख नाम हटाए गए थे. बीजेपी ने सुप्रीम कोर्ट के फैसले का स्वागत किया किंतु कांग्रेस ने सीधा सवाल उठाया कि जब नागरिकता का फैसला गृहमंत्रालय को करना है, तो करोड़ों लोगों के नाम चुनाव आयोग ने कैसे हटा दिए? जो नागरिकता तय नहीं कर सकता, वह मताधिकार कैसे छीन सकता है? यह आरोप भी अपनी जगह है कि एसआईआर में कुछ समुदायों या वर्गों के वोट देने के अधिकार को कम किया जाता है.

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

निशानेबाज

सूर्यवंशी के रूप में आया तूफान राजस्थान रॉयल की अनोखी शान

पड़ोसी ने हमसे कहा, 'निशानेबाज, सूर्यवंशी के तेज के सामने कोई टिक नहीं पा रहा है. वह अत्यंत सबल और प्रखर है. उसे देखकर आंखें चौंधिया जाती हैं.'

हमने कहा, 'गर्मी के इस भयानक मौसम में सूर्य की तीव्र किरणें आग उगल रही हैं. भारतीय तो 45-46 डिग्री तापमान बर्दाश्त कर लेते हैं, लेकिन इसी समय हमेशा ठंड में रहने वाले इंग्लैंड के लोग 38 डिग्री टेंप्रेचर में ही बेहोश होकर गिरने लगे हैं. सूर्य का कोप इतना प्रबल है कि कूलर और एसी भी राहत नहीं दे पा रहे हैं.

पड़ोसी ने कहा, 'निशानेबाज, हम सूर्य नहीं, बल्कि सूर्यवंशी की बात कर रहे हैं. महाभारत में 16 वर्ष के वीर अभिमन्यु ने कौरवों के छक्के छुड़ा दिए थे. इस समय 15 वर्ष के वैभव सूर्यवंशी ने आईपीएल के एक सीजन में सर्वाधिक 65 छक्के मारकर क्रिस गेल का 59 छक्के का रिकार्ड तोड़ दिया है. सूर्यवंशी का शस्त्र उसका बल्ला है, जिससे वह हल्ला बोल करता है. वह गेंदबाजों का काल है और बड़ी निर्ममता से गेंदों को

पीटता है. उसने सनराइजर्स हैदराबाद के खिलाफ केवल 28 गेंदों में 97 रन बनाए और अपनी टीम राजस्थान रॉयल्स को जीत दिलाई.'

हमने कहा, 'आप सूर्यवंशी से इतने प्रभावित क्यों हैं? अपने देश में चंद्रवंशी, भृगुवंशी, रघुवंशी, गुप्तवंशी और मौर्यवंशी भी रहे हैं. महाकवि कालिदास ने तो रघुवंशम महाकाव्य लिखकर इस वंश की कीर्ति का बखान किया है. रघुवंश में काकुस्थ, इक्ष्वाकु, सगर, अंशुमान, भगीरथ, रघु, दिलीप, अज, दशरथ और राम जैसे प्रतापी राजा हुए. दशरथ ने तो देवताओं के साथ मिलकर असुरों से युद्ध किया था. दसों दिशाओं में उनके रथ दौड़ते थे. लंका में दशानन था तो अयोध्या में दशरथ ! रघुवंश ही सूर्यवंश है. सूर्य की संतानों के नाम हैं- शनि, यम, वैवस्वत मनु, यमुना, तापी, सुग्रीव, कर्ण, अश्विनीकुमार व सावर्णी मनु.'

पड़ोसी ने कहा, 'निशानेबाज, इस कलियुग के प्रथम चरण में क्रिकेट बहुत लोकप्रिय हो गया है. लोग टीवी पर अमिताभ बच्चन की फिल्म सूर्यवंशम देखते-देखते बोर हो गए, लेकिन वैभव सूर्यवंशी की तूफानी बल्लेबाजी बड़े चाव से देखते हैं.'

शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

CROSS WORD 12273 -डॉ. सागर खादीवाला

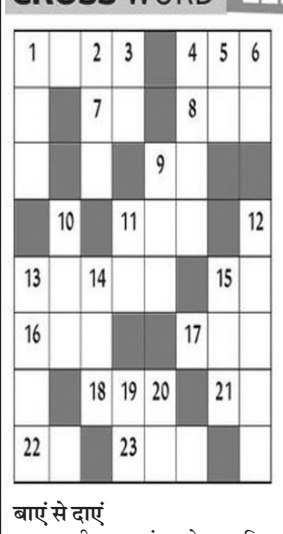

को स्पष्ट करने के लिए हो, स्टेटमेंट ऊपर से नीचे
1. इज्जत, सम्मान, पूज्यभाव (सं.) 2. कपाट, पट, दरवाजे का पल्ला 3. गीला, आर्द्र, भीगा हुआ. 4. क्रम 5. गर्मी, बुखार 6. कोई शब्द या बात बार-बार बोलने का काम 9. यदि, एक सुगंधित वृक्ष 10. एक राक्षसी जिसे कंस ने श्रीकृष्ण को मारने के लिए भेजा था 11. युद्ध, लड़ाई 12. राजनीतिज्ञ 13. संकुचित होना, सिमटना 14. ममत्व, अपनापन 15. सदाचारी, सती-साध्वी 19. रामचंद्रजी के दो पुत्रों में से एक 20. जो प्रकट किया गया हो

बाएं से दाएं
1. भयभीत, आतंक से प्रभावित (सं.) 4. तारों का बना एक प्रसिद्ध वाद्य यंत्र 7. आघात, प्रहार, आक्रमण, दिन 8. आग की लौ, गरम हवा का झोंका 9. तलवार (सं.) 11. वह खिड़की या दरवाजा जिसमें लोहे के छड़ लगे हों 13. अन्यायी, दुखदायी 15. कुर्सी मेज-पलंग आदि का पैर 16. बदनामी (सं.) 17. करुणा, दया, रहम 18. तालू संबंधी, तालू से उच्चारण होने वाला वर्ग 21. संख्या उनचास का वर्गमूल 22. विविधा, मातामह 23. किसी विषय में कोई कही गई बात जो किसी बात

Solution 12272

मं	ग	ल	वा	र	■	बिं	दु
ज	वा	ह	र	■	स	ब	ब
न	ह	र	■	क	च्चा	■	ला
■	■	■	क	ल	ई	■	■
प	त	वा	र	■	■	स	फा
रि	स	■	तू	फा	नी	■	न
हा	ली	■	त	य	■	घा	स
स	म	झ	■	दा	व	त	■

ज्योतिषाचार्य पंडित प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में व्यर्थ की यात्राओं में धन व्यय होगा. मानसिक उलझन रहेगी. शत्रु पक्ष प्रबल रहेगा. वर्ष के मध्य में व्यक्तिगत संबंधों में सुधार होगा.सामाजिक कार्यों में ख्याति प्राप्त होगी. वर्ष के अन्त में व्यर्थ की भागदौड़ से मन तनावग्रस्त रहेगा. दाम्पत्य जीवन सुखमय रहेगा.

मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों का शत्रु पक्ष प्रबल रहेगा. वृष और तुला राशि के व्यक्तियों का यात्राओं में धन व्यय होगा. कर्क राशि के व्यक्तियों को मानसिक उलझन रहेगी. सिंह राशि के व्यक्तियों का व्यक्तित्व निखार आयेगा. मिथुन और कन्या राशि के व्यक्तियों को दाम्पत्य जीवन में सुख रहेगा. मकर और कुभ राशि के व्यक्तियों को स्वाभाव मिलनसार और मधुर रहेगा. धनु और मीन राशि के व्यक्तियों का दाम्पत्य जीवन मिलनसार और आनन्दमय रहेगा.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक स्वस्थ्य, हृष्टपुष्ट, और मधुरभाषी, परिश्रमी, चतुर, होगा, बुद्धिमान व्यवसायिक दृष्टिकोण वाला होगा, सबको लोकप्रिय होगा, 8 वर्ष की आयु तक तकलीफ उठायेगा, बाद में अच्छा रहेगा, विद्या के क्षेत्र में रूचि रहेगी, खेलकूद के प्रति विशेष आकर्षित रहेगा.

मेष- किसी रिश्तेदार या पड़ोसी से विवाद होगा, मांगलिक कार्यों के प्रति उत्साह बना रहेगा, विरोधी वर्ग पराजित होगा, शुभ सूचना मिलेगी.

वृषभ- भूमि भवन के क्रय विक्रय से लाभ होगा, मातृपक्ष से शुभ समाचार मिलेगा, स्वास्थ्य संबंधी शिथिलता रहेगी, कार्यों में व्यस्तता रहेगी.

मिथुन- यात्रा में सावधानी रखें, व्यर्थ की परेशानी और तनाव से बचें, जीवनसाथी का सहयोग रहेगा, युवाओं को रोजगार के अवसर प्राप्त होंगे.

कर्क- ले देकर काम करने की योजना सफल होगी, अधिकारियों के सहयोग से आर्थिक लाभ होगा, धन एवं ऐश्वर्य की प्राप्ति होगी, मनोरंजक स्थल की सैर होगी.

सिंह- बैचारिक गतिरोध दूर होगा, कारोबारी यात्रा सफल होगी, मन प्रसनन रहेगा, मामा पक्ष से लाभ होगा, पारिवारिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी.

कन्या- आकस्मिक लाभ के अवसर मिलेंगे, रूखे व्यवहार से परिचित नाराज हो सकते हैं, यात्रा में उठाईगीरों से सावधानी रखें, पूज्य व्यक्ति की चिन्ता रहेगी.

तुला- समय के अनुसार और तौर तरीकों में बदलाव लाभकारी रहेगा, मनोरंजक यात्रा की योजना बनेगी,संतान के दायित्वों की पूर्ति होगी, व्यसनों से दूर रहें.

वृश्चिक- घरेलू मामले सुलझाने में सफलता मिलेगी, मेलजोल लाभकारी रहेगा, किसी पारिवारिक समारोह में भाग लेना होगा, माता पिता का सहयोग रहेगा.

धनु- विवादास्पद मामले सुलझेंगे, कोई मूल्यवान वस्तु खोने का डर है, अपने सामान की सुरक्षा व्यवस्था स्वयं करें, संतान की चिन्ता दूर होगी.

मकर- ऐसा कोई कार्य बनेगा, जिससे आपकी आर्थिक स्थिति दृष्टिकोण और समृद्धि में वृद्धि होगी, दाम्पत्य जीवन सुखमय बना रहेगा, अधिक जल्दबाजी न करें.

कुम्भ- आर्थिक एवं व्यवसायिक दिशा में किया गया प्रयास सार्थक होगा, संबंधों में प्रगाढ़ता आयेगी, राजकीय क्षेत्र में सफलता प्राप्त होने का योग है.

मीन- मित्रों का समागम होगा, यथेष्ट सहयोग मिलेगा, मानसिक रूप से आप स्वस्थ्य रहेंगे, नवीन कार्यों की योजना पर विचार विमर्श होगा.

उदयकालीन ग्रह चाल

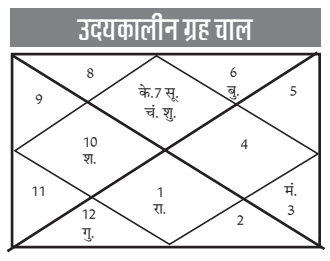

पंचांग

रा.मि. 09 संवत् 2083 अधिक ज्येष्ठ शुक्ल चर्तुदशी शनिवासरे दिन 11/12, विशाखा नक्षत्रे दिन 1/8, शिव योगे दिन-रात, वणिज करणे सू.उ. 5/17, सू.अ. 6/43, चन्द्रचार तुला प्रात: 6/35 से वृश्चिक, पर्व-व्रत पूर्णिमा, शु.रा. 8,10,11,2,3,6 अ.रा. 9,12,1,4,5,7 शुभांक-0,3,7.

व्यापार भविष्य

अधिक ज्येष्ठ शुक्ल चर्तुदशी को विशाखा नक्षत्र के प्रभाव से जीरा, धनियां, लालमिर्च, अजवाईन, जाबित्री, के भाव में तेजी होगी, चांदी, रूई, सरसों,सूरजमुखी, के भाव में मंदी होगी, बाजार का रूख देखकर व्यापार करें. भाग्यांक 4110 है.

SUDOKU 7405

			4		6			
					2	7		
	6	8				9		
5	3							6
				6				
7							9	2
		9				8	5	
		2	1					
			3		4			

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सू-दोकू 7404

2	9	7	1	3	6	4	8	5
3	1	6	5	8	4	2	9	7
5	4	8	7	9	2	6	3	1
9	2	1	4	7	3	8	5	6
7	8	3	6	1	5	9	2	4
4	6	5	9	2	8	1	7	3
1	7	4	2	5	9	3	6	8
6	3	2	8	4	7	5	1	9
8	5	9	3	6	1	7	4	2